8

चिंतनशील स्वतंत्रता सेनानी

विश्वगुरु भारत का पतन क्यों हुआ? इस प्रश्न का उत्तर डॉक्टरजी ने खोज निकाला। ''राष्ट्रीय भावना के शिथिल पड़ जाने से असंगठित एवं शक्तिहीन हुए हिंदू समाज की दयनीय स्थिति के कारण ही पूर्व काल में दिग्विजय का डंका बजाने वाला हिंदू समाज सैकड़ों वर्षों की पाशविक सत्ता के नीचे पद दलित है, अतः शक्तिसंपन्न, पुनरुत्थानशील एवं संगठित हिंदू समाज ही भारत की स्वतंत्रता, राष्ट्रीय अखंडता एवं सुरक्षा की गारंटी हो सकता है।" डॉक्टरजी ने 'रामराज्य' के दृष्टा महात्मा गांधी, 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का उद्घोष करनेवाले लोकमान्य तिलक, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' की ललकार भरने वाले सुभाष चंद्र बोस, अखंड भारत की विजयी कल्पना करनेवाले अरविंद/सावरकर, 'भीख माँगने से आजादी नहीं मिलती' की गगनभेदी घोषणा करनेवाले लाला लाजपत राय, राष्ट्रीय एकता के लिए बलिदान देने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, हिंदुत्व की रणभेरी बजानेवाले भाई परमानंद, हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना के संस्थापक सरदार भगत सिंह तथा सामाजिक समरसता के पुरोधा डॉ. आंबेडकर के विचारों एवं कार्यपद्धति का गहराई से चिंतन किया।

कारावास में एक वर्ष की सश्रम सजा काट रहे डॉ. हेडगेवार को जब अचानक यह समाचार मिला कि महात्मा गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध चल रहे देशव्यापी असहयोग आंदोलन को अचानक वापस लेने की घोषणा की है तो उनकी प्रतिक्रिया बहुत क्षुब्धकारी थी—

- जब यह आंदोलन अपने अंतिम चरण में था तो गांधीजी ने इकतरफा

फैसला क्यों ले लिया? आंदोलन का नेतृत्व सँभाल रहे नेताओं से मशवरे के बिना सत्याग्रह को समाप्त कर देने में कौन सी राजनीतिक बुद्धिमत्ता थी?

- महात्माजी घबरा गए अथवा अंग्रेजों के झाँसे में आ गए?
- कहीं ऐसा तो नहीं था कि कार्यकर्ताओं के अनुशासन एवं निष्ठा में कोई कमी आ गई थी?
- या फिर आंदोलनकारी नेताओं की क्षमता/पात्रता के अभाव ने आंदोलन की नैया डुबो दी थी?
- अहिंसा की एक-आध घटना होने पर सारे आंदोलन को वापस लेकर गांधीजी को आखिर क्या प्राप्त हुआ?

सत्य साबित हुई डॉक्टरजी की आशंका

गांधीजी की इच्छा एवं योजनानुसार असहयोग आंदोलन, अहिंसक रास्ते पर चल रहा था। 5 फरवरी को चौरी-चौरा (उत्तर प्रदेश) में अंग्रेजों द्वारा सताए हुए लोगों की भीड़ ने स्थानीय पुलिस चौकी में आग लगाकर अफसर सहित 22 सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। इस घटना के मात्र एक सप्ताह बाद ही 12 फरवरी को गांधीजी ने आंदोलन को स्थगित कर दिया। महात्माजी ने अपनी मानसिक स्थिति और तीखे अनुभव को इन शब्दों में प्रकट किया था—'ईश्वर ने मुझे तीसरी बार सावधान किया है कि जिसके बल पर सामूहिक असहयोग समर्थनीय एवं न्यायोचित ठहराया जा सकता है, वह तथ्यपूर्ण एवं अहिंसा का वातावरण अभी भारत में नहीं है।' कहा जा सकता है कि डॉ. हेडगेवार के सार्थक चिंतन 'अनुशासन, समर्पण, निरंतरता और ध्येयनिष्ठा ही संगठन का सशक्त आधार' को गांधीजी ने अपनी इस शाब्दिक व्यथा में स्वीकार कर लिया था।

डॉ. हेडगेवार के चिंतन और गांधीजी द्वारा व्यक्त व्यथा का समर्थन पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी किया था—'ध्येयवाद का कहीं पता नहीं था। उसके स्थान पर सच्चे अनुकरणवाले भावनाशील व्यक्ति को राजनीति से घृणा हो जाए, इस प्रकार की चालबाजियाँ चल रही थीं। कांग्रेस को अपने हाथ में लेने के लिए कई गुट ताल ठोक रहे थे।' पं. नेहरू एवं स्वयं गांधीजी के इस निष्कर्ष से तो यही स्पष्ट होता है कि असहयोग आंदोलन गलत रास्ते पर चल पड़ा था, नेता डाँवाँडोल हो गए थे। गांधीजी असफलता के सागर में डूब रहे आंदोलन को तिनके का सहारा देने के लिए कोई बहाना खोज रहे थे। आंदोलन समाप्त हो गया।

लोगों को जबरदस्ती पिलाई जा रही कथित प्रेरक घुट्टी 'एक वर्ष में स्वराज्य' की धज्जियाँ उड़ गईं। विदेशी ताकत प्रसन्न हुई और भारतवासियों की बिजली का करंट लगने जैसी स्थिति हो गई। विद्यालयों, महाविद्यालयों में विद्यार्थी लौटने लगे। न्यायालयों में वकीलों ने अपना कारोबार शुरू कर दिया। खिलाफत-आंदोलन का समर्थन करके मुसलिम समाज को हिंदुओं के साथ जोड़कर मुख्यधारा में लाने का मकसद धाराशायी हो गया।'

खिलाफत आंदोलन को महात्मा गांधी के समर्थन में जो आशंका डॉ. हेडगेवार ने जताई थी, वह सही सिद्ध हुई। डॉक्टरजी के चिंतन के अनुसार मुसलमान भारतीय हैं, विदेश से नहीं आए, वे हिंदू पूर्वजों की संतान हैं। यही विचार-तत्त्व उन्हें भारत की मुख्यधारा में जोड़े रख सकता है, जिसके वे अभिन्न अंग हैं, परंतु महात्माजी इस प्रकार के चिरस्थायी मार्ग पर चलने की बजाय उनके तुष्टीकरण के पृथकतावादी मार्ग पर चल पड़े। 'हम भारतीय ही हैं, विदेशी हमलावरों की हमलावार तहजीब से हमारा कोई लेना-देना नहीं है, हिंदुत्व आधारित राष्ट्रवाद के हम अभिन्न अंग हैं'—मुसलिम समाज को यह अहसास दिलाने के बजाय गांधीजी ने अलगाववादी रास्ते पर चलने का अवसर दिया। परिणाम सामने आ गया। न खुदा मिला न विसाले सनम, न उधर के रहे न इधर के। डॉ. भीमराव आंबेडकरजी ने गांधीजी द्वारा खिलाफत आंदोलन को दिए गए समर्थन के बारे में लिखा—'क्या कोई भी समझदार व्यक्ति हिंदू-मुसलिम एकता के लिए इतनी दूर तक जा सकता है।'

डॉ. हेडगेवार जब कारावास के बाहर आए तो खिलाफत के बारे में व्यक्त की गई उनकी आशंका को और ज्यादा बल मिला। कुछ थोड़े ही मुसलिम नेताओं को छोड़कर शेष सारा समाज 'अलगाववादी' हो गया। मुसलमानों के मुँह से वंदे मातरम् का उद्घोष न होकर 'अल्ला हो अकबर' के नारे गूँजने लगे। इस समाज को जज्बाती बनाकर पृथकतावाद को बढ़ावा देने के उद्‌देश्य से मुसलिम नेता, मुल्ला मौलवी सक्रिय हो गए। पढ़े-लिखे समझदार मुसलमान भी अपने को अलग समझने/कहने लगे। पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—'धार्मिकता के लिए कोई आकर्षण न रखनेवाले पश्चिमी रंग-ढंग के मुसलमान भी दाढ़ी बढ़ाने लग गए।' अलगाववाद का विषैला प्रचार तेज हो गया और मुसलिम समाज को अपने को हिंदुओं से अलग करने में ही फायदा नजर आने लगा।

24 घंटे स्वातंत्र्य की चिंता

डॉ. हेडगेवार असहयोग की विफलता एवं खिलाफत के समर्थन को हिंदू समाज की कमजोरी मानते हुए कहा करते थे कि मुसलमानों को दोष देने के बजाय हिंदुओं को अपने अंदर झाँकते हुए अपने जातिगत दोषों को दूर करने पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। डॉक्टरजी का चिंतन यही था कि 'आत्मविस्मृत' हिंदू समाज की सामर्थ्यहीनता एवं दयनीय अवस्था ही हमारे देश के पतन का कारण है। डॉक्टरजी ने एक बार एक मुसलिम नेता समीउल्ला खाँ से बात-बात में पूछ लिया कि 'असहयोग आंदोलन' में इतना जबरदस्त प्रचार होने के बावजूद आपने खद्दर की सफेद टोपी न पहनकर तुर्की टोपी ही पहन रखी है, क्यों? खान साहब ने बिना लाग-लपेट के स्पष्ट कर दिया—'मैं पहले मुसलमान हूँ। यह टोपी इसकी निशानी है। इसे छोड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता।' डॉक्टरजी सोचते थे कि हिंदुओं द्वारा 'अल्ला हो अकबर' का नारा लगाने के बाद भी मुसलमान वंदे मातरम् का उद्घोष क्यों नहीं करते?

इस प्रकार से इन सब राजनीतिक हलचलों, कांग्रेस द्वारा कट्टरपंथी मुसलिम नेताओं का समाज का अंधाधुंध समर्थन अधिकांश मुसलमानों की आक्रामक वृत्ति और विघटित हिंदू समाज की दब्बू नीति का बहुत गहरा मंथन डॉक्टरजी के मानस-पटल पर चल रहा था। प्रत्येक परिस्थिति के केवल तात्कालिक निदान पर उनका ध्यान बहुत कम रहता था। वे तो समस्या की जड़ों तक पहुँचकर उसे गहराई से जानने और उसका स्थायी समाधान निकालने के अपने निर्धारित उद्देश्य के लिए चिंतनशील रहते थे। प्रत्येक समय राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति अर्थात् पूर्ण स्वतंत्रता के किसी सशक्त मार्ग पर विचार करते हुए भी उन्होंने अपनी तात्कालिक राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को नहीं छोड़ा, बल्कि उन्होंने अपनी समाज सेवा की इन गतिविधियों में से अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं की खोज करके उन्हें अपने राष्ट्रवादी विचारों की परिधि में जोड़ लिया। डॉक्टरजी के अंत:करण में 24 घंटे राष्ट्रभक्ति और हिंदू स्वाभिमान की आग प्रज्ज्वलित रहती थी।

मध्यप्रांत कांग्रेस के प्रांतीय सहमंत्री

सन् 1922 में डॉ. हेडगेवार को मध्यप्रांत की कांग्रेस इकाई में प्रांतीय सह मंत्री का पदभार सौंप दिया गया। डॉक्टरजी ने कांग्रेस के भीतर ही एक संगठित स्वयंसेवक दल बनाने का प्रयास किया, परंतु वे 'फरमाबरदार' वालंटियर दल खड़ा करने के पक्ष में कतई नहीं थे। उनकी स्वयंसेवक की कल्पना केवलमात्र दरियाँ बिछाना और कुरसियाँ उठाना तक सीमित नहीं थी। वे चाहते थे कि "देशभक्ति

से ओत-प्रोत, शील से विभूषित, गुणोत्कर्ष से प्रभावी और निस्सीम सेवाभाव से स्वयंस्फूर्त अनुशासित जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा लेकर चलनेवाले क्रियाशील एवं कर्तव्यशील तरुण लाखों की संख्या में खड़े किए जाएँ।" इसी हेतु उन्होंने अपने एक विश्वस्त मित्र गंगाप्रसाद पांडे के नेतृत्व में 'राष्ट्रीय मल्लविद्या शाला' संस्था की स्थापना की। युवकों को शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से परिपक्व करने के लिए डॉक्टरजी की अध्यक्षता में एक 'विश्वस्त मंडल' का गठन भी हुआ। कुश्ती, मलखंभ, दंड संचालन के अलावा इस मंडल में वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों तथा स्वतंत्रता संग्राम के किसी सशक्त माध्यम पर भी विस्तार से चर्चा होती थी। जब सरकार की कुदृष्टि इस संस्था द्वारा दिए जा रहे सैन्य प्रशिक्षण पर पड़ी तो डॉक्टरजी ने उसकी समस्त गतिविधियों को गुप्त रूप से चलाने की व्यवस्था कर दी। काम भी चलता रहा और सरकारी गुप्तचर भी शांत हो गए।

डॉक्टरजी का खुलकर समर्थन न करनेवाले अनेक सामाजिक तथा धार्मिक नेता भी उनसे मिलने उनके घर पर आते रहते थे। "मैं आपका तो स्वागत करता हूँ, परंतु आपके विचारों का स्वागत नहीं कर सकता" इन सभी जानकारों के साथ डॉक्टरजी ने घनिष्ठ संबंध बनाए रखे। डॉक्टरजी नागपुर में कार्यरत विभिन्न परिषदों/संगठनों इत्यादि में रुचि लेने के साथ मध्यप्रांत के भिन्न-भिन्न संगठनों के गणमान्य नेताओं के साथ मित्रवत् वार्त्तालाप करने के लिए भी समय निकाल लेते थे। नागपुर शहर में किसी भी प्रकार के सार्वजनिक कार्यक्रम में वे पहुँचते ही थे। चाहे शराबबंदी के लिए धरने-प्रदर्शन हो, चाहे बच्चों द्वारा होनेवाले गणेशोत्सव हों, डॉक्टरजी सबकी पीठ पर अपना हाथ बनाए रहते थे। अपनी इस व्यस्त जीवनचर्या में भी समय निकालकर कलकत्ता में हुई क्रांतिकारियों की एक गुप्त बैठक में वे पहुँच गए। जब नागपुर के उनके मित्रों ने पूछा कि कलकत्ता में क्या करने जा रहे हैं तो उन्होंने सहज स्वभाव से उत्तर दिया, "नैशनल कॉलेज के पूर्व छात्रों के एक सम्मेलन में जा रहा हूँ।" इस तरह चारों ओर से चौकन्ने रहकर ही वे बोलते थे।

सर्वस्व त्याग करने का संकल्प

असहयोग आंदोलन के विफल होने के तुरंत बाद गांधीजी गिरफ्तार हो गए और उनको एक अदालत में ले जाकर नाटकीय ढंग से केस चलाकर छह वर्ष के कारावास की सजा दे दी गई। नागपुर में महात्मा गांधीजी के भक्तों ने उनकी गिरफ्तारी के दिन 18 मार्च को प्रत्येक वर्ष 'गांधी दिवस' मनाने की परंपरा प्रारंभ की। डॉक्टरजी इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते थे।

ऐसे ही एक कार्यक्रम में डॉक्टरजी के हुए एक ओजस्वी भाषण में उनके अंत:करण में उठ रहे 'राष्ट्र की स्वतंत्रता' के तूफान को समझा जा सकता है। उन्होंने कहा, "आज का दिन अत्यंत पवित्र है। महात्माजी जैसे पुण्यश्लोक पुरुष के जीवन में व्याप्त सद्गुणों के श्रवण एवं चिंतन का यह दिन है। उनके अनुयायी कहलाने वाले के सिर पर तो उनके गुणों का अनुकरण करने की जिम्मेदारी है। महात्मा गांधी के आंदोलन को उनके अनुयायियों से यदि किसी चीज की अपेक्षा है तो वह है, स्वार्थ त्याग की। कहना एक और करना दूसरा, इस प्रकार के दोहरे व्यवहार वाले लोग महात्माजी को नहीं चाहिए।''' ऐसे दोगले अनुयायियों के सहारे महात्माजी की नौका कभी भी पार नहीं लगेगी। महात्माजी का अनुयायी बनना है तो अपने सिर पर तुलसी-पत्र रखकर सर्वस्व का त्याग करके रणांगण में उतरिए।"

डॉक्टरजी के मानस पर इस तरह के विचार रात-दिन छाए रहते थे और वे तत्कालीन सब प्रकार की समस्याओं का निदान खोजते और करते रहते थे। वे असहयोग आंदोलन के भीतरी स्वरूप एवं खिलाफत के पश्चात् हो रहे तथा भविष्य में विकराल रूप लेनेवाले मुसलिम कट्टरवाद के भीषण विस्फोट से चिंतित थे। वे इस समय भी कांग्रेस के सक्रिय नेता थे और खादी के वस्त्र ही पहनते थे। इस समय उनका ध्यान कांग्रेस के भीतर समर्पित स्वयंसेवकों की तैयारी पर केंद्रित था। 1923 में वर्धा में आयोजित स्वयंसेवक परिषद् में भी उन्होंने इसी विषय पर बल देते हुए कहा था कि प्रत्येक परिस्थिति से जूझकर मरने वाले स्वयंसेवक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। आज के संदर्भ में एक संगठन के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन के लिए यह अत्यंत जरूरी है। क्रांतिकारी नेता बापूजी पाठक के अनुसार, "डॉक्टरजी का रुख चुनावों की राजनीति से अलिप्त रहकर ऐसी संस्था बनाने का था, जिसमें नई पीढ़ी को संस्कारित किया जा सके।"

उधर नवोदित तुर्की के नेता कमाल पाशा ने खलीफा को पदच्युत करके इस पद को ही समाप्त कर दिया। भारत के मुसलिम समाज के अहं को बड़ी चोट पहुँची और यह समाज 'पैन-इस्लामिज्म' के नए पृथकतावादी एवं हिंदू विरोधी दंभ के साथ खंभ ठोकने के लिए तैयार हो गया। 1923 के बाद हुए भयानक सांप्रदायिक दंगे इसी कट्टरपंथी सोच का परिणाम थे। हिंदुओं के सामूहिक संहार को देखने के पश्चात् सशस्त्र क्रांति के एक अग्रणी सेनानी भाई परमानंद ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—"वहाँ के हिंदुओं का दैन्य एवं यातनाएँ देखकर मैं बहुत व्यथित हो गया। जब मुझे पता चला कि स्थानीय 'खिलाफत समिति' के पदाधिकारी दंगा करने तथा

हिंदुओं की जान और माल का विनाश करने के लिए उत्तरदायी हैं, तो मुझे विवश होकर यह निष्कर्ष निकालना पड़ा कि खिलाफत आंदोलन ही हिंदू-मुसलिम दंगों की जड़ था।" भाई परमानंद ने एक गहरे चिंतन के बाद वापस लाहौर (पंजाब) में आकर 'हिंदू संघ' नामक संगठन की नींव रखी। मुसलिम समाज का यह घिनौना स्वरूप मोपला, नागपुर, सहारनपुर इत्यादि स्थानों समेत पूरे देश के सामने आया। डॉ. हेडगेवार का चिंतन भी इसी तात्त्विक आधार पर केंद्रित होता चला गया।

देश की स्वतंत्रता के लिए प्रत्येक आंदोलन एवं प्रयास का गहराई से अध्ययन करने के लिए डॉक्टरजी कोई भी अवसर नहीं छोड़ते थे। नागपुर में ही डॉ. मुंजे ने एक 'राइफल एसोसिएशन' बनाई, जो युवकों को निकटवर्ती जंगलों में ले जाकर निशानेबाजी तथा सामने खड़े शत्रु का प्रतिकार करने का प्रशिक्षण देते थे। डॉ. हेडगेवारजी ने भी डॉ. मुंजे के साथ कई-कई दिनों तक जंगलों में रहकर यह प्रशिक्षण प्राप्त किया। वैसे तो उन्होंने कलकत्ता में अनुशीलन समिति में अपनी सक्रियता के समय निशानेबाजी तथा बम विस्फोट करने की सारी विधियों की अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली थी।

हिंदू स्वाभिमान हेतु दिंडी सत्याग्रह

इन्हीं दिनों नागपुर में मुसलिम समाज की हिंदू विरोधी आक्रामक मनोवृत्ति के खिलाफ डॉ. हेडगेवार के मार्गदर्शन में ऐतिहासिक दिंडी सत्याग्रह का आयोजन हुआ। नागपुर के प्रसिद्ध शुक्रवार तालाब के निकट 'गणेश पेठ' हिंदुओं का एक पूजास्थान था। मुसलिम नेताओं ने यहीं पर एक खुले स्थान में पहले एक झोंपड़ी बना दी। हिंदुओं के शांत रहने पर यहीं पर एक मसजिद तामीर कर दी गई। इन कट्टरपंथी मुसलिमों ने जिलाधीश से यह आदेश भी जारी करवा दिया कि इस मसजिद के पास से हिंदुओं की कोई भी धार्मिक यात्रा बाजे-गाजे के साथ नहीं निकल सकती। नतीजनत 1923 में होनेवाला गणेश-विसर्जन कार्यक्रम नहीं हो सका। हिंदुओं को इस इकतरफा एवं अधिनायकवादी सरकारी आदेश से गहरा धक्का लगा। इस आदेश ने हिंदू नेताओं को संगठित होकर 'हिंदू-जागृति' करने का अवसर दिया। फलस्वरूप राजा लक्ष्मणराव भोंसले, डॉ. मुंजे, परांजपे तथा डॉ. हेडगेवार ने इस काले आदेश का विरोध करने के लिए सत्याग्रह करने का फैसला किया। हिंदुओं के इस संगठिति वरोध के परिणाम को भाँपकर मुसलमान नेताओं ने प्रसिद्ध काकड़ आरती तथा भजन मंडली अर्थात् 'दिंडी यात्रा' को जाने देने की इजाजत दे दी।

प्रथम दिन 23 अक्तूबर को तो यात्रा विधिवत् निकल गई, परंतु बाद के दिनों में मुसलिम नेताओं ने फिर यात्रा को रोक दिया। एक दिन तो उन लोगों ने बकायदा लाठी-दंड के द्वारा हिंदू यात्रा पर आक्रमण करके यात्रा को समाप्त करने का प्रयास किया। डॉ. हेडगेवार ने अपने साथी हिंदू नेताओं के साथ घर-घर जाकर हिंदुओं को भारी संख्या में यात्रा में शामिल होने के लिए तैयार किया। हिंदुओं के अधिकारों की रक्षा करने के लिए एक 'रक्षा समिति' का गठन करके डॉक्टरजी को मंत्री बना दिया गया। इस यात्रा ने एक विशाल आंदोलन का रूप ले लिया। 8 नवंबर को डॉक्टरजी ने भारी भीड़ का नेतृत्व करते हुए सत्याग्रह किया। 11 नवंबर को एक जनसभा का आयोजन किया गया, जिसमें 40 हजार से ज्यादा लोग शामिल हुए थे। इस विशाल सभा की अध्यक्षता करने के पश्चात् राजा लक्ष्मणराव भोंसले ने 'हिंदू सभा' के गठन की घोषणा की। इस नए संगठन के महामंत्री डॉ. हेडगेवार को बनाया गया। इस सभा का उद्देश्य हिंदुस्थान के हिंदुओं के लिए अपने धार्मिक अधिकारों की प्राप्ति घोषित किया गया।

हिंदुओं को इस प्रकार संगठित होते देखकर मुसलिम कट्टरपंथियों ने 19 नवंबर को निकाली जा रही गणेश यात्रा पर हमला कर दिया। इसे देखते हुए डॉक्टरजी ने अब हिंदुओं को प्रतिकार के लिए तैयार करने हेतु मोहल्ला अनुसार बैठकों में हिंदुओं को लाठी-भालों के साथ यात्रा में शामिल होने का आह्वान किया। 21 नवंबर को यात्रा में लाठीधारी युवकों के साथ हिंदुओं की भारी उपस्थिति से मुसलिम नेताओं के होश उड़ गए। परिणाम यह हुआ कि 25 नवंबर को कार्तिक पूर्णिमा के दिन काकड़-आरती तथा गणेश पेठ में गणेश विसर्जन पूर्ण शांति एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। दिंडी आंदोलन के इस सारे घटनाक्रम एवं कालखंड में डॉक्टरजी के असीम साहस, निडरता और गहरी सूझबूझ का परिचय हिंदू एवं मुसलमान दोनों को ही मिला।

निर्भीक पत्रकार डॉ. हेडगेवार

एक समय था जब कांग्रेस के सभी नेता 'पूर्ण स्वतंत्रता' के ध्येय को समक्ष रखकर स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा तय करने से घबराते थे। उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भारतीय या राष्ट्रीय जैसा एक भी संस्कार नहीं था। ऐसे अंग्रेजपरस्त माहौल में डॉक्टरजी द्वारा गठित संस्था 'नागपुर नेशनल यूनियन' ने भारत की पूर्ण स्वतंत्रता का उद्घोष करके कांग्रेस और अंग्रेजों दोनों को खुली चुनौती दी थी। यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि कांग्रेस ने जिस स्वराज्य का शोर मचाया

था, वह भी अंग्रेजी साम्राज्यवाद के अधीन उपनिवेशक दर्जे का था। अपने पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए डॉ. हेडगेवार और उनके साथी स्वातंत्र्य सेनानियों ने एक 'स्वातंत्र्य प्रकाशन मंडल' की स्थापना की। एक दैनिक समाचार-पत्र 'स्वातंत्र्य' चलाने का निश्चय किया। अनेक प्रकार की विपरीत परिस्थितियों में और विदेशी सरकार के रहनुमाओं के बीच देश के पूर्ण स्वातंत्र्य के अधिकार के लिए समाज की आवाज को बुंद करते हुए समाचार-पत्र निकालना कोई आसान काम नहीं था।

परंतु कठिन-से-कठिन पथ को भी अपने निरंतर एवं अथक परिश्रम से करना यही तो डॉ. हेडगेवार की स्वतः फितरत थी। इसी कर्मठता, साहस और उत्साह का परिचय देते हुए ना.ह. पालकर अपनी पुस्तक 'डॉ. हेडगेवार चरित' में लिखते हैं—"पहले से ही इतने साप्ताहिक एवं दैनिक समाचार-पत्र पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी जड़ें जमाकर बैठे थे, परंतु तरुणों का जोश ही कुछ ऐसा होता है कि वे परिस्थिति की विपरीतता को देखकर भी इस पर हावी होने की आकांक्षा रखते हैं। नागपुर से स्वातंत्र्य का एक्शन इसी तरह के उत्साह का द्योतक था। चिटणीस पार्क के पास बेनिगिरी महाराज के बाड़े में 'स्वातंत्र्य' दैनिक का कार्यालय खोला गया तथा 1924 के प्रारंभ में श्री विश्वनाथराव केलकर के संपादकत्व में पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हो गया। डॉ. हेडगेवार प्रकाशक-मंडल के प्रवर्तकों में से थे तथा शुरू से ही स्वातंत्र्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने में प्रमुखता से भाग लेते थे। अतः उन्हें एक प्रकार से समाचार-पत्र का संचालक कहना ही ठीक होगा। अब डॉक्टरजी का सारा समय इस पत्र के कार्यालय में ही व्यतीत होने लगा। यह काम करते हुए उनकी सशक्त एवं प्रभावशाली लेखनी की भी जानकारी देशवासियों को मिल गई। जब कभी लेखों की कमी आती, वे स्वयं लिखकर इस संकट को भी दूर कर देते थे। सोमवार को छोड़कर सप्ताह के सभी दिनों में प्रकाशित होनेवाले इस अंक की कीमत दो पैसे थी। इस समाचार-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर वीर सावरकर की पुस्तक 'ईकोज फ्रॉम अंडेमान्स' तथा अंतिम पृष्ठ पर उन्हीं की पुस्तक 'हिंदुत्व' के विज्ञापन रहते थे।"

समाचार-पत्र की प्रसार संख्या तो बढ़ गई, परंतु आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई। समाचार-पत्र जैसा अति कष्टसाध्य काम संभवतया डॉक्टरजी ने अपने वैचारिक आधार को साधारण जन तक पहुँचाने की इच्छा से ही किया। इस पत्र में अनेक काम अकेले ही करते हुए उन्होंने वेतन के नाम पर एक आना भी नहीं लिया। सेवा के अहंकार से भी मुक्त होकर बिना कुछ लिये निस्स्वार्थ भाव से काम

करना डॉ. हेडगेवार का सहज स्वभाव था। फिर भी समाचार-पत्र के बंद होने की नौबत आ गई। उस समय कोई भी व्यक्ति पत्र का संपादक बनने के लिए तैयार नहीं हुआ। डूबती नैय्या पर सवार होकर नैया के डूबने की जिम्मेदारी कोई नहीं लेता। सफलता का श्रेय लेने के लिए सब दौड़े चले आते हैं, परंतु विफलता का अपयश लेने की हिम्मत कोई नहीं जुटा पाता। इस काम के लिए भी सुविचारित फैसला लेने की जरूरत रहती है। अत: स्वाभाविक ही था कि समाचार-पत्र को बंद करने की घोषणावाला संपादकीय डॉक्टरजी ने ही लिखा। परंतु इस एक वर्ष के बहुत छोटे से कालखंड में भी लोकसंग्रह के विशेषज्ञ डॉक्टरजी ने कई लेखकों, साहित्यकारों एवं पत्रकारों से दोस्ती बनाकर उन्हें अपने भविष्य की योजना में भागीदार बनने के लिए तैयार कर लिया।

निर्बल हिंदू समाज पर गंभीर चिंतन

समाचार-पत्र के सभी प्रकार के क्रियापकलापों से मुक्त होने के बाद अ. डॉक्टरजी की सारी शक्ति युवकों के साथ संपर्क बढ़ाने में लगने लगी। एक शक्तिशाली राष्ट्रवादी संगठन बनाने की उनकी इच्छा बलवती हो गई। डॉक्टरजी के साथ उनकी योजनानुसार काम करनेवाले युवकों के एक नेता प्रा.पा.कृ. सावलापुरकर के अनुसार, "नागपुर में तरुणों के सब कार्यक्रमों की ओर डॉ. हेडगेवार का ध्यान बार-बार रहता था तथा उस समय प्रत्येक तरुण उनकी ओर सहज ही मार्गदर्शन के लिए देखता था। क्रांतिकारी दल से उनका संबंध तथा उनकी कथाएँ तरुणों को बड़ी रोमांचकारी लगती थीं। 1923 अथवा 1924 में 'राष्ट्रप्रेम चर्चा मंडल' में हम लोगों ने डॉ. हेडगेवार को बुलाया था। उस समय शुद्ध राष्ट्रवाद कैसा होता है, इस विषय का उन्होंने मार्मिक विश्लेषण किया था।' इन्हीं दिनों नागपुर समेत देश के कई स्थानों पर कट्टरपंथी मुसलमानों ने हिंसक उत्पात किया। महात्माजी ने इन एकतरफा अत्याचारों से दुखी होकर 21 दिन का उपवास शुरू करते हुए कहा था, "मेरी इच्छा है कि आवश्यकता पड़ी तो अपने रक्त से भी दोनों के बीच की खाई पाट दूँ।" गांधी समुदाय के नेताओं ने 'शांति-परिषदों' की स्थापना की।

इन परिषदों के बारे में डॉ. आंबेडकरजी ने लिखा था, "एकता-परिषदों में केवल लुभावने प्रस्ताव होते थे तथा उनकी घोषणा होते हुए भी व्यवहार में उनका उल्लंघन होता था।" ऐसे विनाशकारी माहौल में भी महात्माजी ने अपने कथित बड़प्पन के अनुसार लिखा था—" शांति के भाषण तथा प्रवचन अब बहुत हो गए।" नारायणहरि पालकर के अनुसार, "गांधीजी को अमानुषता का नंगा नाच दिखाई देता

था, फिर भी वे हिंदुओं को यही कहते थे कि मेरी कौन सुनता है? लेकिन इस समय मेरा हिंदुओं से यही कहना है कि तुम चाहे मर जाओ, पर मारो नहीं? कट्टरपंथियों के द्वारा हिंदुओं पर ढाए जा रहे अत्याचारों को देख कर अनेक तत्कालीन हिंदू नेता 'हिंदुत्व' पर ठोस चर्चा करने लगे।'' मोपला नरसंहार के बाद स्वामी श्रद्धानंद ने स्पष्ट कहा था, "एक-एक प्रांत में दोनों जातियाँ एक-दूसरे के प्रति संशयग्रस्त हो गई हैं, यह मुझे स्वयं दिख रहा है। इसका कारण यही है कि मुसलमान जितने संगठित हैं, उतना हिंदू समाज नहीं है। वह अब भी विशृंखलित है। इसका एक ही उपाय है कि हिंदू नेताओं को अपना समाज संगठित करना चाहिए।"

इसी तरह 1924 में हिंदू महासभा के बेलगाँव अधिवेशन में पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा था—"हिंदुओं में भीरुता तथा दुर्बलता न होती तो हिंदू-मुसलमानों के बहुत से दंगे टल गए होते। इन दंगों से राष्ट्र के लिए विघातक परिस्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण उनके लिए बहुत कुछ अंशों में जिम्मेदार हिंदुओं की दुर्बलता को दूर करना आवश्यक है।" पूना की एक सार्वजनिक सभा में बोलते हुए स्वामी श्रद्धानंद ने कहा था—"सिंहगढ़ सरीखे कठिन स्थान पर जिस महाराष्ट्र ने भगवाध्वज लहराया था, वह महाराष्ट्र अत्यंत निर्भय था। आज हम अपना भगवाध्वज छोड़कर किसी भी झंडे के नीचे एकत्र होने लगे हैं। यह भूल दूर करके पुनः अपने सही स्वरूप को पहचानिए तथा सच्चे वैदिक धर्म तथा आर्य संस्कृति की रक्षा कीजिए। देशबंधु चितरंजन दास तथा लाला लाजपत राय ने भी यही निष्कर्ष निकाला कि हिंदू समाज को संगठित करना अब समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।"

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी आत्मकथा में लिखा—'हिंदू बाबूगिरी में रँगे हुए तथा निद्राशील हैं।' सतारा (महाराष्ट्र) में संपन्न 'महाराष्ट्र प्रांतीय परिषद्' में डॉ. रामराव देशमुख ने तो यहाँ तक कहा था—"हिंदी राष्ट्रीयत्व को यदि फिर से जिंदा करना है, तो हिंदुओं को भी मुसलमानों के समान संगठित तथा बलशाली बनना होगा।" चार वर्षों तक अली बंधु महात्माजी के साथ विदूषक जैसे चक्कर काटते रहे, पर उनको अभी तक राष्ट्रीयता की जानकारी नहीं हो सकी। वे आए तो कहाँ से? डॉ. मुंजे तो अपने सार्वजनिक भाषणों में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे—"गले में तुलसी की माला पहनकर राजनीति नहीं हो सकती, नागपुर में डेढ़ लाख की आबादी में केवल बीस हजार मुसलमान होने के बावजूद हमें ही अपनी धन-संपत्ति एवं जान का खतरा लगा रहता है।" प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता स्वामी सत्य देव परिव्राजक ने वर्धा की एक सभा में कहा था—"यह कल्पना अशुद्ध है कि हिंदू

संगठन मुसलमानों के विरुद्ध हैं। महात्माजी का यह विचार भी गलत है कि हिंदू संगठन केवल बदमाश लोगों की ठोक-पीट करने के लिए है। हिंदुस्थान हमारा प्राण है, वही हमारा जीवन-सर्वस्व है, हिंदुओं की यह निष्ठा है, परंतु मुसलमानों में यह भाव नहीं है। निष्टा के विषय में जब कभी उनको समझाने के प्रयास होते हैं तो वे समझने लगते हैं कि हिंदू उनसे भयभीत हैं। उनका यह भ्रम दूर करने के लिए हिंदुओं के संगठन की आवश्यकता है।"

एक ऐतिहासिक विचार-बैठक

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की हिंदुत्व विरोधी राजनीति तथा मुसलमानों के तुष्टीकरण के फलस्वरूप पृथकतावाद गहरा गया तथा इसी समय मुसलिम नेताओं ने पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत, सिंध तथा पंजाब आदि मुसलिम बहुल क्षेत्रों को मिलाकर एक स्वतंत्र मुसलिम राज्य की माँग उठा दी। महात्मा गांधीजी को भी अंत में यही अनुभव हुआ। इन दिनों की सारी राजनीतिक परिस्थितियों, सामाजिक गतिविधियों तथा धार्मिक क्रियाकलापों पर डॉक्टरजी ने अपने अंतरंग सहयोगियों अप्पाजी जोशी, विश्वनाथ राव केलकर तथा भाऊजी कावरे के साथ चर्चा-बैठकों का क्रम शुरू कर दिया। इन बैठकों में भावी संगठन पर गहरा मंथन होता था। "हिंदू समाज में तरुण पीढ़ी को साथ लेकर उसके अंदर हिंदुत्व, राष्ट्रीयता तथा अपने गौरवशाली अतीत के संस्कार डालने चाहिए''' हिंदुस्थान के हितों के साथ जिसके सारे हित संबंध हैं, जो देश को भारतमाता मानकर अति पवित्र दृष्टि से देखता है तथा जिसका इस देश के बाहर कोई अन्य आधार नहीं है, ऐसा एक महान् धर्म और संस्कृति से एक सूत्र में गुँथा हुआ हिंदू समाज ही यहाँ का राष्ट्रीय समाज है। इस समाज को जाग्रत् एवं संगठित करना ही वास्तव में राष्ट्र का जागरण एवं संगठन है। वही राष्ट्रकार्य है। इस प्रकार का राष्ट्रीय संगठन दलीय राजनीति से पूर्णतया अलिप्त रहना चाहिए तथा किसी भी राजनीतिक दल के व्यक्ति को अपने मत रखते हुए भी संगठन में काम करना चाहिए।"

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि खिलाफत आंदोलन के समाज घातक दुष्परिणाम तथा असहयोग आंदोलन की विफलता ने अधिकांश राष्ट्रवादी हिंदू नेताओं को यह सोचने के लिए बाध्य कर दिया कि भारत और भारतीयता को बचाना है तो एक शक्तिशाली संगठित हिंदू समाज का निर्माण करना ही एक मात्र समाधान हो सकता है। कांग्रेस के ज्यादातर हिंदू नेताओं ने डॉ. हेडगेवार के विचार से, दबी जबान से ही सही, सहमति जता दी। इस प्रकार परिवर्तित हो रही राजनीतिक

मानसिकता, हिंदू संगठन के निर्माण पर बनती जा रही सहमति, मुसलमानों के तुष्टीकरण के विरोध में कांग्रेस के भीतर से उठनेवाली आवाजों तथा देशभक्त हिंदू युवकों का एकत्र होते जाना को डॉक्टरजी ने सुवर्णावसर जानकर एक विचार-बैठक बुलाई। इसमें अप्पाजी जोशी समेत डॉक्टरजी के प्राय: सभी सहयोगी उपस्थित हुए। डॉक्टरजी ने विभिन्न अखाड़ों के प्रमुखों को भी बैठक में भाग लेने का आग्रह किया।

डॉ. हेडगेवार ने हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है, इस विषय पर सबकी सहमति बनाते हुए विस्तृत चर्चा हेतु अनेक प्रश्न सबके समक्ष रखे। यह प्रश्न एवं विषय ऐसे थे कि जिन पर अभी तक किसी भी नेता अथवा दल ने सोचा तक नहीं था।

गंभीर प्रश्नों पर गहरा चिंतन

देश स्वतंत्र होना चाहिए, यह तो सर्वसम्मत-समयोचित सत्य है, परंतु यह परतंत्रता आई क्यों? विश्वगुरु भारत का इतना पतन कैसे हो गया? मुट्ठी भर विदेशी आक्रांता हमारे विशाल देश में लूट-खसोट, कत्लेआम, जबरन मतांतरण की क्रूर चक्की चलाने में कैसे सफल हो सके? तुर्क, पठान, अफगान, मुगल और अंग्रेजों जैसे लुटेरे हमलावरों और व्यापारियों के समक्ष हमारे देश के वीरव्रती योद्धा और सर्वगुणसंपन्न राजा महाराजा बेबस क्यों हो गए? जब हमारी आँखों के सामने ही हमारे ज्ञान-विज्ञान के भंडार ग्रंथालयों, समग्र मानवता के प्रेरणा स्रोत मठ-मंदिरों, विश्वविद्यालयों/आश्रमों तथा अन्य धार्मिक संस्थानों को धू-धू करके जलाया गया, तब हम उसका प्रतिकार क्यों नहीं कर सके? यह सत्य है कि 1200 वर्षों में अनेक हिंदू वीरों एवं महापुरुषों ने अपने बलिदान देकर परतंत्रता के विरुद्ध अपनी जंग को जारी रखा, परंतु यह प्रतिकार राष्ट्रीय स्तर पर संगठित रूप से एक साथ क्यों नहीं हुआ?

उपरोक्त सभी प्रश्नों पर सभी के विचार सुनने के बाद डॉक्टरजी ने अपने सारगर्भित मंथन को सबके सामने रख दिया। उल्लेखनीय है कि सभी तरह के संगठनों, राजनीतिक दलों, धार्मिक संस्थाओं, समितियों, क्रांतिकारी गुटों, अखाड़ों इत्यादि में सक्रिय भागीदारी करने तथा उनकी कार्यपद्धति और उद्देश्य को समझने-परखने के बाद डॉक्टरजी का यह मंथन था। इस मंथन को संक्षेप में इस तरह सबके सामने रखा गया कि संगठित, शक्तिसंपन्न और पुनरुत्थानशील हिंदू समाज ही देश की रक्षा की गारंटी हो सकता है। अतीत में जब भी भारत का राष्ट्रीय समाज अर्थात् हिंदू समाज शक्तिहीन एवं असंगठित हुआ तो हमारा भारत पराजित हो गया, परंतु जब भी हमारे हिंदू समाज ने एकजुट होकर विदेशी हमलावरों का सामना किया, तब-तब विदेशी एवं विधर्मी शक्तियाँ न केवल पराजित ही हुईं, बल्कि हमने उन्हें

भारत की मुख्य और मूल सांस्कृतिक धारा में आत्मसात् भी कर लिया। डॉ. हेडगेवार के अनुसार यदि यही विघटनकारी चरित्र और यही मानसिकता बनी रही और हम एकजुट होकर एक राष्ट्रपुरुष के रूप में खड़े न हुए तो हमारी स्वातंत्रता को परतंत्रता में बदलने में देर नहीं लगेगी। इसलिए अंग्रेजों के विरुद्ध चल रहे देशव्यापी स्वतंत्रता संग्राम को राष्ट्रीय चेतना का आधार प्रदान करना अति आवश्यक है।

डॉ. हेडगेवार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे सेनापति थे, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए जूझ रहे सभी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक संगठनों और क्रांतिकारी दलों को निकट से देखा, समझा और परखा था। डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने महात्मा गांधी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, महामना मदन मोहन मालवीय, भाई परमानंद, डॉ. मुंजे, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, वीर सावरकर, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और सरदार भगत सिंह इत्यादि नेताओं के साथ संपर्क साधा हुआ था। डॉ. हेडगेवार ने स्पष्ट देखा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा चलाया जा रहा स्वतंत्रता आंदोलन अंग्रेज शासकों की हिंदुत्व एवं भारत विरोधी योजना के अनुसार चल रहा है। कांग्रेस के नेता विदेशी आक्रमणकारियों—मुहम्मद बिन कासिम, गजनी, गौरी, नादिरशाह, चंगेज खाँ, बाबर तथा इन्हीं के वंशज औरंगजेब की विरासत के रक्षक मतांतरित मुसलमानों का साथ लेने के लिए उनकी स्तुति में लगे हुए हैं। फलस्वरूप अलगाववाद बढ़ रहा है तथा देश में विभाजन का माहौल बनाया जा रहा है। वास्तव में अंग्रेज यही चाहते थे। इसी उद्देश्य के लिए एक कट्टरपंथी ईसाई ए.ओ. ह्यूम ने ब्रिटिश राज की योजना, सहायता एवं आशीर्वाद से ही कांग्रेस को जन्म दिया था।

डॉ. हेडगेवार मुसलिम विरोधी नहीं थे बल्कि अनेक राष्ट्रवादी मुसलमान उनके मित्र थे। डॉक्टरजी का स्पष्ट कहना था कि विदेशी हमलावरों ने जब भारत में लूट-खसोट कर तलवार के जोर पर अपनी सत्ता स्थापित की तो उन्होंने बलात् खून-खराबा करते हुए भारत के राष्ट्रीय समाज हिंदू को मुसलमान बनाना शुरू कर दिया। अधिकांश हिंदुओं ने आक्रमणकारियों का डटकर सामना किया। अपनी कुरबानियाँ दीं, धर्म नहीं छोड़ा। परंतु जो हिंदू इन दुर्दांत आक्रमणकारियों का सामना नहीं कर सके, उन्होंने अपना धर्म छोड़कर इसलाम कबूल किया और हमलावरों के साथ हो गए। हिंदू पूर्वजों की संतान इन नए मुसलमानों ने हमलावर शासकों के तलुए चाटने शुरू किए और अपने ही पूर्वजों के बनाए हुए मठ-मंदिर तोड़े अर्थात् अपनी ही राष्ट्रीय संस्कृति को बरबाद करने में जुट गए। वास्तव में यह एक तात्कालिक

धार्मिक परतंत्रता थी। जिसे इन लोगों ने स्थायी परतंत्रता के रूप में कबूल कर लिया। अपनी सनातन संस्कृति को ठुकराकर मुसलिम हमलावरों की हमलावर तहजीब को स्वीकार कर लिया। यह भी कहा जा सकता है कि भारतमाता के ये कुपात्र पुत्र अपनी माता की गोद छोड़ परायी माँ की गोद में जा बैठे।

स्वतंत्रता संग्राम के उस अज्ञात सेनापति डॉ. हेडगेवार ने अपने गहरे मंथन में से यह निष्कर्ष निकालकर सबके सामने रखा—"हमारे समाज और देश का पतन मुसलमानों या अंग्रेजों के कारण नहीं हुआ, अपितु राष्ट्रीय भावना के शिथिल हो जाने पर व्यक्ति और समष्टि के वास्तविक संबंध बिगड़ गए तथा इस प्रकार की असंगठित अवस्था के कारण ही एक समय दिग्विजय का डंका दसों दिशाओं में बजाने वाला हिंदू समाज सैकड़ों वर्षों से विदेशियों की पाशविक सत्ता के नीचे पद-दलित है।" डॉ. हेडगेवार के इसी चिंतन ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को जन्म दिया।

□